सत्यवचन

प्रोग्राम न. 0005

मार्गदर्शिका

प्रिय श्रोता,

मित्रों, आपका इस बाइबल अध्ययन कार्यक्रम में स्वागत है। हम उन श्रोता मित्रों को बता दें, जो आज पहली बार इस कार्यक्रम को सुन रहे हैं। श्रोता हम इस कार्यक्रम में बाइबल अध्ययन की रूपरेखा सीख रहे हैं जिसमें अब तक हमने देखा है कि बाइबल क्या है? हम कैसे जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है? और उसके अन्तर्गत हमने पाँच मुख्य कारणों को देखा था। (1) बाइबल का सुरक्षित होना, (2) पुरातत्व विभाग का प्रमाण, (3) पूर्ण हो चुकी भविष्यद्वाणियाँ, (4) परिवर्तित जीवन और, (5) परमेश्वर का आत्मा इसे वास्तविक बनाता है।

इसके पश्चात् हमने पिछले दो कार्यक्रमों में देखा कि प्रकाशन क्या है? और ईश्वर प्रेरणा क्या है? आज हम इसी अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए देखेंगे कि स्पष्टीकरण या प्रकाश डालना क्या है? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर के वचन के लिखे जाने के लिए, परमेश्वर की ओर से प्रकाशन, ईश्वरीय प्रेरणा और वचन का स्पष्टीकरण या उस पर प्रकाश डालना अनिवार्य है, ताकि हम परमेश्वर के वचन को पढ़कर समझ व सीख सकें। तो इससे पहले कि हम आज के विशेष अध्ययन को आरम्भ करें। आइए हम परमेश्वर से सहायता माँगें और प्रार्थना करें। ताकि इस अध्ययन में हम जो कुछ भी सीखें, हमारे जीवन के लिए लाभकारी हो सके। तो आइए हम अपनी आँखों को बन्द करें और प्रार्थना करें।

हमारे जीवित और सामर्थी परमेश्वर पिता, हम आपका धन्यवाद करते हैं इस कार्यक्रम के लिए जिसे आपने हमें दिया है, ताकि हम आपके जीवित वचन का अध्ययन दूर रहकर भी एक साथ कर सकते हैं। पिताजी आपसे हमारी प्रार्थना है कि आप हम सब श्रोताओं को आपके वचन को समझने के लिए अपनी बुद्धि, ज्ञान व समझ प्रदान कीजिए। ताकि जब हम आपके वचन का अध्ययन करें तो यह हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शक और आत्मिक जीवन के लिए उन्नति का कारण ठहरे। हम उन श्रोता मित्रों के लिए प्रार्थना करते हैं, जो निराश, व चिन्तित हैं, प्रभु जी आप उन्हें शान्ति प्रदान करें और आज के इस कार्यक्रम के द्वारा उनके जीवन में एक नई आशा दें। और हम सबको अपनी आशीषों से परिपूर्ण करें। प्रार्थना, सामर्थी प्रभु यीशु के नाम से माँगते हैं, आमीन!

प्रिय श्रोता, आज हम Illumination स्पष्टीकरण या प्रकाश डालना, पर विचार करेंगे। सबसे पहले हम इसके अर्थ को समझ लें कि स्पष्टीकरण क्या है? इसका अर्थ इस प्रकार से है जबकि आपके पास और मेरे

पास बाइबल है जो ईश्वरीय और मानवीय पुस्तक है। यह पुस्तक मनुष्यों के द्वारा लिखी गई जो अपने विचारों को प्रगट कर रहे थे। परन्तु ठीक उसी समय वे परमेश्वर के वचन को भी लिख रहे थे। और इसे हमें सिर्फ और सिर्फ पवित्र आत्मा ही सिखा सकता है या इस वचन पर प्रकाश डालकर समझा सकता है। यद्यपि हम बाइबल की उन सच्चाईयों या घटनाओं को अपने तरीके से ढूँढ़ सकते हैं परन्तु पवित्र आत्मा ही है जो हमारे हृदय तथा मस्तिष्क को खोलता है ताकि हम उस आत्मिक सच्चाई को जो परमेश्वर के वचन में है समझ सकें। यहाँ पर कहने का मतलब है कि यदि पवित्र आत्मा हमें वचन का स्पष्टीकरण या प्रकाश नहीं देता है तो हम उसे अपनी बुद्धि से नहीं समझ सकते जैसा हमें समझना चाहिए। इसलिए पवित्र आत्मा को हमारा शिक्षक होना चाहिए।

प्रिय मित्र, प्रकाश से सत्य की पहचान होती है। इस संसार के ईश्वर ने लोगों की बुद्धि को अन्धा करके रखा है। यदि पवित्र आत्मा से वचन का प्रकाश न हो तो अविश्वासियों की आत्मिक आँखें नहीं खुल सकती। पौलुस ने साफ–साफ लिखा है कि "शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं न वो उन्हें जान सकता है, क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिन्थियों 2:14)।

पौलुस ने कुरिन्थ वासियों को लिखते हुए कहा है – (1 कुरिन्थियों 2:7–9), परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। परन्तु जैसा लिखा है, "जो बातें आँख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं, वे ही है जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।" यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात है कि किसी भी वस्तु की जानकारी हमें देखने व सुनने के द्वारा और कुछ कारणों को पता लगाने के द्वारा होती है और यहाँ पर पौलुस हमें बताते हैं कि कुछ बातें हैं जिसे हमारी आँखों ने नहीं देखा है और न कानों ने सुना है। और ऐसी चीज़ों तक अपने मस्तिष्क के द्वारा पहुँचना भी असम्भव है। तब आप इस संसार में उन्हें कैसे जान सकेंगे? परन्तु परमेश्वर ने इसे पवित्र आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट कर दिया है। 1 कुरिन्थियों 2:10 में पौलुस लिखते हैं – "परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर क गूढ़ बातें भी जाँचता है।" पवित्र आत्मा बाइबल के वचनों पर प्रकाश डालता है जिसके द्वारा हम सरलता से वचन को समझ लेते हैं अन्यथा हमारे लिए वचन को समझना कठिन होता। 1 कुरिन्थियों 2:9 पद कभी–कभी दफन हो जाता है। एक सेवक इस बात को लागू करता है कि जो मर गया वह इस बात को नहीं जानता परन्तु अब वह उन बातों को जानेगा जिन्हें वह पहले नहीं जानता था। और सम्भवतः यह सत्य है क्योंकि हम स्वर्ग में बहुत शिक्षा प्राप्त करेंगे। परन्तु पद 9 के कहने का वास्तविक अर्थ यह नहीं है। इससे पहले कि हम प्रबन्धक के हाथ में जाएँ, इस जीवन में ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें आप और मैं स्वाभाविक माध्यमों से नहीं सीख सकते। इसलिए पवित्र आत्मा को हमारा शिक्षक होना ही चाहिए।

प्रिय श्रोता, आपको याद होगा कि प्रभु यीशु मसीह ने एक बार अपने शिष्यों से अपने बारे में एक प्रश्न पूछा कि "लोग मुझे क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" उन्होंने कहा, कि आपको कोई कुछ और दूसरा कुछ कहता है।" (जी हाँ, यदि आज यही प्रश्न लोगों से किया जाए, तो हमें बहुत से उत्तर विभिन्न विचारों के साथ मिलेंगे।) यीशु ने शिष्यों से पूछा "... परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो, कि मैं कौन हूँ?" और शमौन पतरस ने उत्तर देकर कहा – आप जीवित परमेश्वर के पुत्र "मसीह" हैं। और यीशु ने उससे कहा, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि माँस और लहू ने इसे तुझ पर प्रगट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है" (मत्ती 16:15–17)। जी हाँ, यह परमेश्वर ही है जिसने शमौन पतरस पर सत्य को प्रगट किया। इसलिए आज भी परमेश्वर के वचन को सिर्फ परमेश्वर ही स्पष्ट कर सकता है ताकि हम उसे समझ सकें। वह पवित्र वचन को वास्तविक बनाने के लिए उस पर प्रकाश डालता है अर्थात् वह हमारे लिए वचन को स्पष्ट करता है।

यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के बाद, उसी दिन यरूशलेम से इम्माऊस जा रहे दो व्यक्तियों के साथ रास्ते में उनसे मिल गए, जो बातचीत करते हुए इम्माऊस जा रहे थे। उसने उनसे पूछा, "ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते चलते आपस में करते हो?" वे उदास से खड़े रह गए। यह सुनकर उनमें से क्लियोपास नामक एक व्यक्ति ने कहा, "क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है, जो नहीं जानता कि इन दिनों में उसमें क्या क्या हुआ है?" उसने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?" उन्होंने उस से कहा, "यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता था। और हमारे प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया।" लूका 24:17–20 में हम इस घटना को पाते हैं। शायद आपको याद होगा कि यीशु पहले ही अपनी मृत्यु के बारे में बता चुके थे कि उनकी मृत्यु कैसे होगी। और यह रूचिदायक बात है कि कई वर्षों पहले लिखी गई भविष्यद्वाणी जो वर्षों से बातें कर रही है अपने लिखित वचन के द्वारा उन दोनों व्यक्तियों ने जो इम्माऊस का जा रहे थे, अपनी आशा को व्यक्त किया जो वे यीशु पर रखते थे। और कहा, "परन्तु हमें आशा थी कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा। इन सब बातों के सिवाय, इस घटना को हुए तीसरा दिन है" (लूका 24:21)। और वे यीशु को वे सब बातों को बताते रहे जिसे वे जानते थे। उन्होंने उसे यह भी बताया कि– "तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही पाया; परन्तु उन्होंने उसको (यीशु) न देखा" (लूका 24:24)। उनकी आशा धुंधली पड़ गई थी और उनके ह्रदय में अन्धेरे ने प्रवेश कर लिया था। प्रिय मित्र, अब ध्यान से सुनें कि यीशु ने उनसे क्या कहा – "तब उसने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियो, भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो! क्या अवश्य न था कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?" तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया" (लूका 24:25–27)। मित्र क्या आपको नहीं लगता कि काश! आप उस वक्त यीशु के साथ होते और उनकी बातों को सुनते जो उनके स्वयं के बारे में 'पुराने नियम' की

पुस्तकों में लिखी है, एक–एक कर आपके सामने रखते। उन्होंने ऐसा ही किया कि पुराने नियम की पुस्तकों में जहाँ भी उनके बारे में लिखा है प्रगट कर दिया। इतना ही नहीं यीशु ने अनन्तः अपने आपको संध्या के भोजन के समय उन पर प्रगट कर दिया कि वह कौन है? इस पर उन दोनों ने कहा – लूका 24:32– "जब वह मार्ग में हम से बातें करता था और पवित्रशास्त्र का अर्थ समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?" उनके वार्तालाप से यह पता चलता है ये दोनों राहगीर यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान को लेकर उलझे हुए थे। लेकिन यीशु ने उनकी समस्या का समाधान कर दिया।

श्रोता, हम ऐसी पुस्तक का अध्ययन कर रहे हैं जो अन्य पुस्तकों से भिन्न है। मैं न केवल यह विश्वास करता हूँ कि पवित्र बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई पुस्तक है, वरन् मेरा विश्वास यह भी है कि यह मनुष्य के लिए एक बन्द पुस्तक है, जब तक कि पवित्र आत्मा आपके ह्रदय को न खोले और वास्तविक न बना दे। अर्थात् पवित्र वचन को समझने के लिए पवित्र आत्मा की सहायता का होना ज़रूरी है। अपने पुनरुत्थान के पश्चात् जब प्रभु यीशु यरूशलेम वापस आए तब उन्होंने अपने शिष्यों को शिक्षा दी और कहा – जिसे हम लूका 24:44 पद में पाते हैं, "फिर उसने उनसे कहा, "ये मेरी वे बातें हैं, जोने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।" अब यहाँ पर ध्यान दीजिए कि प्रभु यीशु ने यह विश्वास किया कि प्रभु के सेवक मूसा ने पंचग्रंथ अर्थात Pentateuch को लिखा, उनका यह भी विश्वास था कि भविष्यद्वक्ताओं ने उनके विषय में भविष्यद्वाणी की, और भजन संहिता भी उनकी ही ओर संकेत करता है। अब यहाँ पर एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बाइबल पद है – लूका 24:45 जहाँ पर लिखा है – "तब उस ने पवित्रशास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी।" प्रिय मित्र, इस पद के अनुसार यह स्पष्ट है कि यदि परमेश्वर आपकी समझ को न खोलें तो आप परमेश्वर के वचन की बातों को नहीं समझेंगें। यही कारण है कि जब हम इस पुस्तक के समीप आएँ तो अपने मन की नम्रता के साथ आएँ और अपनी सब उच्च शिक्षा और सांसारिक ज्ञान को एक ओर रख दें। अर्थात् हमें अपने बौद्धिक स्तर को भूलकर इस पुस्तक के समीप आना चाहिए। आइए हम पुनः 1 कुरिन्थियों की पत्री में वापस जाकर, पौलुस के कथन को देखें, जिसे हम 1 कुरिन्थियों 2:13–14 पद में पढ़ते हैं – पौलुस कहता है – "जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं। परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।" यही कारण है कि जब कभी कोई नामधारी मसीही, भाई या बहन आते हैं, चाहे वो प्रचारक क्यों न हों, कहते हैं कि वे अब इस बात पर विश्वास नहीं करते कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। यदि वो विश्वासी नहीं है तो वो इस बात को समझेगा ही नहीं। क्योंकि पौलुस ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि परमेश्वर की बातें समझना शारीरिक व्यक्ति के क्षेत्र की बात नहीं है। क्योंकि यह आत्मिक व्यक्ति के क्षेत्र का विषय है। इसलिए एक शारीरिक व्यक्ति इसे नहीं समझ सकता। चाहे वह कोई भी क्यों न हो। Mark Twain जो एक

मसीही विश्वासी नहीं था, उसका कहना था – "कि पवित्र बाइबल की जो बातें मेरी समझ में नहीं आती उनसे मुझे कोई परेशानी नहीं होती है, किन्तु मैं उन बातों की चिन्ता करता हूँ जिन्हें मैं समझता हूँ या मेरी समझ में आती हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जिसे एक अविश्वासी या गैर मसीही भी समझ लेता है, और उन्हीं बातों के कारण कई लोग परमेश्वर के वचन को ठुकरा देते या स्वीकार नहीं करते हैं।" इसके विषय में Pascal ने इस प्रकार कहा – "मानवीय ज्ञान को समझना ज़रूरी है ताकि उसे प्यार किया जाए। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान को प्यार करना ज़रूरी है ताकि उसे समझा जा सके।"

प्रिय मित्र, अब तक हम स्पष्टीकरण या प्रकाश के विषय में विचार करते आए हैं, लेकिन अब मैं इस विषय को छोड़कर अगले विषय की ओर बढ़ रहा हूँ। लेकिन इसके पूर्व मैं कुछ बातों को आपके सामने रखना चाहता हूँ – केवल परमेश्वर का आत्मा आपके मन और हृदय को खोल सकता है कि वे देखें और यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करें ताकि वे उस पर विश्वास करें कि वह उनका उद्धारकर्त्ता है। वास्तव में यह कितनी अद्‌भुत बात है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब कभी भी मैं प्रभु के वचन को बाँटने के लिए कलीसिया (चर्च) में खड़ा हुआ मैंने अपने आप को असहाय महसूस किया। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं जितना भी अच्छा वचन बोलूँ मैं किसी के जीवन को परिवर्तित नहीं कर सकता। मैं अपने आप को न केवल असहाय परन्तु कमज़ोर भी महसूस कर रहा था। लेकिन उसी समय, दूसरी तरफ मैं सामर्थी भी था। यह मेरा, सामर्थ्य नहीं, परन्तु मैं जानता था कि जो वचन मैं बोल रहा हूँ वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जीवित और वास्तविक बन सकता है। क्योंकि परमेश्वर का वचन कभी भी व्यर्थ नहीं जाता है।

प्रिय मित्र, पापी के उद्धार के हेतु परमेश्वर के वचन का प्रकाश अनिवार्य है। भजन संहिता 119:130 – "तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।" यही वचन का प्रकाश प्रत्येक विश्वासियों की चाल के लिए अनिवार्य है। भजन संहिता 119:105 पद में लिखा है – "तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।" प्रिय मित्र, वचन के प्रकाश के द्वारा बड़े–बड़े प्रभावशाली कार्य होते हैं। प्रेरितों के काम 18:28 में परमेश्वर का सेवक अपुल्लोस, आत्मा से भरकर वचन सुनाता था। जिसके बारे में लेखक इस प्रकार लिखते हैं – "क्योंकि वह पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है, बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा।" जी हाँ, जब वचन का प्रकाश परमेश्वर देता है तो उसे आसानी से समझ सकते हैं और दूसरों को भी सही शिक्षा दे सकते हैं। जिस प्रकार अपुल्लोस पवित्रशास्त्र का प्रमाण देकर लोगों को सही शिक्षा दे रहा था कि यीशु ही मसीह है। पौलुस ने भी अपने ज्ञान को लोगों के सामने प्रस्तुत नहीं किया यद्यपि वह विद्वान व्यक्तियों में से एक था। फिर भी उसने अपने ज्ञान पर घमण्ड नहीं किया। क्योंकि वह यह बात भली प्रकार से जानता था कि केवल वचन के प्रकाश के फलस्वरूप ही लोग उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए 'प्रेरितों के काम' पुस्तक का लेखक प्रेरितों के काम 17:2–3 में लिखता है – "पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके साथ वाद–विवाद किया; और

उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था कि मसीह को दुःख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना अवश्य था; और "यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ "मसीह" है।" यहाँ पर पौलुस ने वचन के प्रकाश में होकर लोगों को प्रमाणित करके बताया कि यीशु ही मसीह है। यह सब कुछ तभी सम्भव होता है जब पवित्र आत्मा वचन में प्रकाश या स्पष्टीकरण देने के द्वारा इसे वास्तविक बनाता है। तब यह और प्रभावशाली हो जाता है, अन्यथा हमें पवित्र वचन को समझने में कठिनाई महसूस होती है। और यही कारण है कि लोग आज परमेश्वर के वचन को पढ़ते तो हैं परन्तु समझते नहीं। क्योंकि वे पवित्र आत्मा का प्रकाश वचन के प्रति नहीं माँगते। इसलिए उन्हें कई बार निराश होना पड़ता है। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि पवित्र आत्मा वचन का प्रकाश/स्पष्टीकरण दे। ताकि आप परमेश्वर के उन महान योजनाओं को अपने जीवन में समझ सकें और आशीष प्राप्त कर सकें। हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आप सब श्रोता भाई–बहनों को वचन का प्रकाश दे कि आप सब उसके महान आशीष को प्राप्त कर सकें।

प्रिय मित्र, आज के इस अध्ययन को हम यहीं पर समाप्त करते हैं, और अगले कार्यक्रम में हम एक नए विषय के साथ अपने अध्ययन को आरम्भ करेंगे। तब तक के लिए मुझे अनुमति दीजिए। प्रभु आप सबको अपनी आशीष प्रदान करे और आपकी सहायता करे। आमीन!